दयानन्द द्विजन्मशताब्दी लेखमाला

# ऋषि दयानन्द का वंशवृक्ष

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

आर्यसमाज के प्रवर्तक तथा वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक स्वामी दयानन्द सरस्वती की द्वितीय जन्मशताब्दी का यह वर्ष है। १८८१ विक्रम संवत् में जन्मे ऋषि दयानन्द को २०८१ विक्रम संवत् में २०० वर्ष पूरे हो जायेंगे। सम्प्रति २०८० विक्रम संवत् प्रवर्त्तमान है, अत: २०८० से लकर २०८१ वि.सं. ऋषि की २००वीं जयन्ती का वर्ष है। पाठकों के ज्ञानार्थ निवेदन है कि ऋषिवर की प्रथम जन्मशताब्दी उनकी शिक्षाभूमि मथुरा में १५ फरवरी से २१ फरवरी १९२५ ई. में तदनुसार फाल्गुन कृष्णपक्ष सप्तमी से त्रयोदशी पर्यन्त विक्रम संवत् १९८१ में बड़े ही समारोह पूर्वक बनाई गयी थी। इस लेख में बाल ऋषि वेदज्ञप्रमाण दयानन्द सरस्वती (मूलशंकर) के वंशवृक्ष के सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी देने का प्रयास किया गया है।

**१. स्वामी जी के पूर्वज** - गुजरात के अन्तर्गत अन्हलवाड़ा के एक राजा मूलराज सोलंकी थे, जो १०वीं शताब्दी के प्रथम या मध्य चरण में उत्तर भारत से १ सहस्र शुद्धचरित्र वेदविद् ब्राह्मणों को लाकर अपने राज्य के विभिन्न स्थानों में उन्हें भूमि आदि सम्पत्ति देकर बसाया। ये ब्राह्मण 'सहस्र औदीच्य' शब्द से अभिहित किये गये। 'उदीच्य प्रकाश' ग्रन्थ के अनुसार उन एक सहस्र ब्राह्मणों में से २१ इक्कीस ब्राह्मणों का चयन करके राजा मूलराज ने उन्हें आसनों पर बिठाकर विशेष पूजा-सत्कार किया। उन आसनों पर बैठे हुए ब्राह्मणों में से चौथे आसन पर जो विप्र बैठे थे वह त्रिवाड़ी उपाधिधारी, सामवेदी, दाल्भ्य गोत्री, पञ्चकार, और कौथुमी शाखा के थे। इसलिए स्वामी जी के पिता जी करशन जी के पिता लालजी के सिद्धपुर आये हुए पूर्व पुरुषों में से पूर्वोक्त ब्राह्मण को प्रधान पुरुष समझना चाहिए। 'उदीच्य सहस्र' ब्राह्मणों में जो ब्राह्मण सामवेदी त्रिवाड़ी ब्राह्मण थे उन्हें राजा मूलराज ने सिद्धपुर ग्राम देकर बसा दिया था। पीछे से कर्शन जी त्रिवाड़ी के पूर्वपुरुषों में कोई व्यक्ति कच्छराज्य के भुज नगर में आकर बस गये। उसके कुछ समय पश्चात् काठियावाड़ में सम्भवत: जामनगर में आये और जामनगर के अन्तर्गत कोशिय ग्राम में आकर बस गये। कर्शन जी के पिता लाल जी किसी जाति सम्बन्धी कार्य के अनुरोध से कोशिया ग्राम को छोड़कर टंकारा में आ बसे थे।[१] कर्शन जी का घर टंकारा के जीवापुर[२] मोहल्ले में था। यहीं पर विक्रम संवत् १८८१ के फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष दशमी वा एकादशी[३] तिथि को मूल नक्षत्र में स्वामी दयानन्द का जन्म कर्शन जी के घर में हुआ था। मूल नक्षत्र में जन्म लेने के कारण ही उनका नाम मूलशंकर रखा गया। उनका अपर नाम पुकार का नाम दयाराम वा दयालजी भी था। मुम्बई के प्राण जीवनदास जी ने ऋषि दयानन्द जीवन-चरित में अन्वेषक और लेखक पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय को यह बताया था कि ऋषिवर ने उन्हें बचपन का अपना नाम 'मूलशंकर' कहा था। स्वामी दयानन्द के पूर्वपुरुषों वा वंशवृक्ष का पता लगाने के लिए बहुत परिश्रम करके पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने जो इतिहास ज्ञात किया, उसी की पुष्टि टंकारा निवासी प्रो. दयालभाई आर्य ने की। दयालभाई का अनुसन्धान प्रकाश में आने पर पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने अपना पूर्वलिखित 'ऋषि दयानन्द का भ्रातृवंश और स्वसृवंश' में दी गई लाभशंकर से प्राप्त वंशावली की असत्यता को समझकर देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय-प्रदत्त वंशवृक्ष को ही मान्य समझा और उसे स्वसम्पादित 'वेदवाणी' के 'दयानन्द अंक' में प्रकाशित भी किया। पाठकों को ऋषि का वंशवृक्ष सुगमता से अवगत हो जाए, एतदर्थ अधोलिखित रेखाचित्र प्रस्तुत किया जाता है-

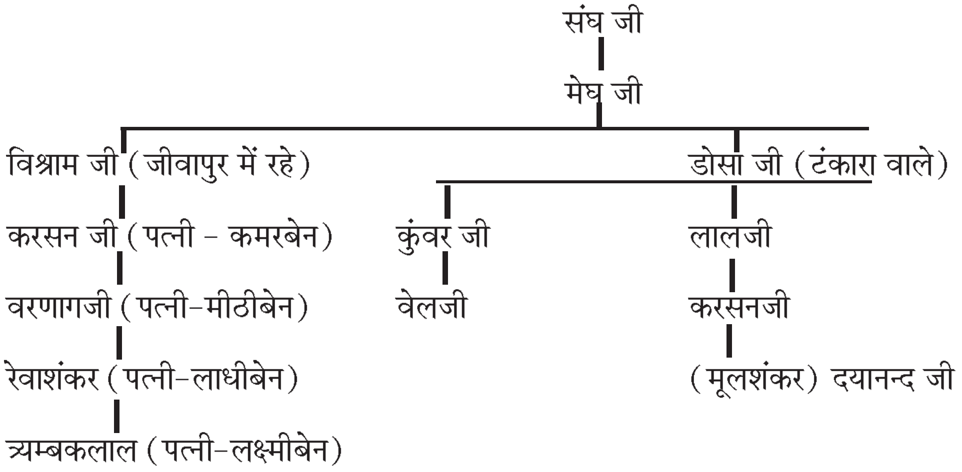


करसन जी/करशन जी/किर्शनजी/किरशन जी ये सभी नाम वा शब्द 'कृष्णजी' शुद्ध (तत्सम) शब्द के अपभ्रंश हैं। इन्हीं अपभ्रंश नामों को अनेक/पूर्वोक्त रूपों में ऋषि दयानन्द के 'जीवन-चरित' में लिखा गया है। उपरिलिखित वंशवृक्ष की प्रामाणिकता के लिए प्रो. दयालभाई आर्य द्वारा कई वर्षों तक अनुसन्धान के अनन्तर लिखी गई पुस्तक 'ऋषि दयानन्द की प्रारम्भिक जीवनी' पठनीय है।[४] मेघ जी के पिता श्री संघ जी के नाम का पता लगना प्रो. दयालभाई के शोधपूर्ण परिश्रम का परिणाम है। मेघ जी के दो पुत्र हुए - १. विश्रामजी, जो जीवापुर में बस गए। २. दूसरे पुत्र डोसा जी जो टंकारा में ही रहे। जीवापुर वासी विश्राम जी के पुत्र करसन जी हुए (ये टंकारा वाले डोसा जी के पौत्र और लालजी के पुत्र करसन जी जो मूलशंकर वा दयानन्द जी के पिताश्री थे, से भिन्न हैं।)

इनकी पत्नी का नाम 'करमबेन' था। इनके पुत्र वरणागजी हुए। पत्नी का नाम मीठीबेन था। इनके पुत्र रेवाशंकर हुए। पत्नी का नाम लाधीबेन। रेवाशंकर के पुत्र का नाम त्र्यम्बकलाल था। त्र्यम्बक जी की पत्नी का नाम लक्ष्मीबेन था। जब दयालभाई ने लक्ष्मीबेन से यह पूछा कि इन चार पीढ़ियों का नाम आपको कैसे पता चला और यह कैसे माना जाए कि ये नाम सच हैं? उत्तर में उन्होंने कहा "ये नाम मेरी सास लाधीबेन ने बताये हैं और ये नाम सच इसलिए हैं कि भाद्रपद मास में (उत्तर भारतीयों के अनुसार आश्विनमास के कृष्णपक्ष में) श्राद्ध करते समय हम इन नामों का स्मरण कर पिण्ड अर्पण करते हैं। इसलिए मुझे ये नाम ठीक से याद हैं।[५]" इन्हीं लक्ष्मी बेन के पति त्र्यम्बकलाल ने प्रो. दयालभाई को बताया कि मेघ जी के पिता का नाम संघ जी था, अस्तु स्वामी दयानन्द जी ने अपने भाई-बहिनों के बारे में 'पूना-प्रवचन' में तथा स्वलिखित 'अपना जन्म-चरित्र' जो लिखा है सो इस प्रकार है-

**(२) स्वामी जी के भाई-बहिनों का परिचय**

**(क)** "मुझसे छोटी एक बहन उससे छोटा एक भाई फिर भी एक बहन और एक भाई अर्थात् दो बहन और दो भाई और हुए थे तब तक मेरी सोलह वर्ष की अवस्था हुई थी। पीछे मुझसे छोटी १४ वर्ष की जो बहन थी उनको हैजा हुआ...।...वैद्य आदि बुलाए, औषधि भी की तथापि चार घण्टे में उस बहन का शरीर छूट गया और सब लोग रोने लगे [ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित 'स्वजन्मचरित्र' (ऋषि दयानन्द सरस्वती के शास्त्रार्थ और प्रवचन का द्वितीय परिशिष्ट पृ. ४५९)]-सम्पादक - पं. युधिष्ठिर मीमांसक"

**(ख)** स्वामी जी ने पूना के १५वें प्रवचन में अपना पूर्वचरित्र वर्णित करते हुए प्रसंग कहा था- "८वें वर्ष में मेरे पीठ की (=पीछे की) एक बहिन उत्पन्न हुई थी।"

[पूर्वोक्त पुस्तक का पृष्ठ ४३३]

''पूना प्रवचन'' के इस स्थल पर इस पुस्तक के सम्पादक पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने १ली टिप्पणी दी है-

''स्वलिखित आत्मचरित के अनुसार २ वर्ष छोटी थी।'' यह टिप्पणी भ्रमोत्पादक है, क्योंकि स्वामी जी ने अपनी दूसरी बहन (भगिनी) के जन्म के समय अपने वय: (अवस्था) का उल्लेख या वर्णन करते हुए अपने आठवें वर्ष का वर्णन किया है। अर्थात् स्वामी जी के अतिरिक्त उनके दो भाई और दो बहिन और थे अर्थात् सब मिलाकर स्वामी जी पाँच भाई-बहिन थे। सभी भाई-बहिनों में स्वामी जी सबसे बड़े थे। स्वामी जी के ठीक पीछे उनसे दो वर्ष छोटी एक बहिन थी जिनका देहान्त हैजा से हो गया था। उस समय स्वामी जी की वय १६वर्ष तथा म्रियमाण बहिन की अवस्था १४ वर्ष की थी और अन्तत: वह काल का ग्रास बन गई। स्वामी जी की दूसरी बहिन का जन्म स्वामी जी के ८वें वर्ष में वर्तमान रहते हुए हुआ था, 'पूना-प्रवचन' में स्वामी जी के स्वकथन का यही तात्पर्य है। मीमांसक जी की इस टिप्पणी का निरसन पं. भगवद्दत्त जी तथा प्रो. भीमसेन शास्त्री (विरजानन्दप्रकाश के लेखक तथा ऋषि जन्मतिथि के अनुसन्धाता) के शोधपूर्ण संपादन तथा लेखन से भी हो जाता है।

१. पं. भगवद्दत्त जी ने स्वसम्पादित 'ऋषि दयानन्द स्वरचित (लिखित वा कथित) जन्मचरित' के पृ. ३ पर लिखा है- ''(१८८९ विक्रम संवत्) फिर आठवें वर्ष मेरा यज्ञोपवीत कराके गायत्री सन्ध्या और उसकी क्रिया भी सिखा दी गई थी और मुझको यजुर्वेद की संहिता का आरम्भ कराके उसमें से प्रथम रुद्राध्याय पढ़ाया गया था। [उसी वर्ष मेरी एक भगिनी का जन्म हुआ था।]'' रामलाल कपूर ट्रस्ट, दशम संस्करण, १९८९ ई.

२. प्रो. भीमसेन शास्त्री लिखते हैं- ख्रीष्टाब्द १९१२ ई. में जब दूसरी बार पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय टंकारा गये थे तब उनकी भेंट अठासी वर्षीय श्री देवचन्द भगवान् वैश्य से भेंट हुई थी। साथ ही टंकारा निवासी प्रभुराम तेजराम आचार्य से भी भेंट हुई थी। श्री आचार्य जी ने वि. संवत् १९३१ में राजकोट में ऋषिवर को देखा था तथा उनसे वार्तालाप भी किया था। इनकी भेंट स्वामी दयानन्द के पितृचरण श्रीकर्षण जी की आत्मीय वृद्ध केशरबाई तथा स्वामी जी की अनुजा प्रेमबाई से भी होती रहती थी। प्रो. भीमसेन शास्त्री के शब्द हैं- ''प्रेमबाई (ये महर्षि की अनुजा थीं। इनका जन्म सं. १८८९ वि. में हुआ था)[६]''

अत: स्पष्ट है कि १८८१ वि. सं. में बालऋषि का जन्म होने के कारण उनके ८वें वर्ष १८८९ सं. में उनकी छोटी बहन प्रेमबाई का जन्म हुआ था।

ऋषि दयानन्द के पितामह लालजी त्रिवाड़ी का आगे का वंशवृत्र इस प्रकार है-

**लालजी**

- करसन जी (टंकारा)
  - मूलशंकर (दयानन्द सरस्वती)
  - पुत्री (१४ वर्ष में देहान्त) (अज्ञात नाम)
  - पुत्र (अज्ञात नाम)
  - पुत्री (प्रेम बाई) (पति-मंगलजी)
    - बोधाजी
      - कल्याण जी
        - पोपटलाल (अपरनाम - प्रभाशंकर) (वंशज बाँकानेर में है)
        - प्राणशंकर (वंशज मध्यप्रदेश में है)
  - वल्लभ (मोंधीबाई)
- पुत्र (अज्ञात नाम)

मूल जी (मूलशंकर) को छोड़कर कर्शन जी के और भी दो पुत्र और दो पुत्रियाँ उत्पन्न हुई थीं। उन दोनों पुत्रों में से एक का नाम वल्लभ जी था। दूसरे का न तो नाम ही मालूम हो सका और न उसके विषय में कोई और बात ही ज्ञात हो सकी। कुछ लोगों ने देवेन्द्रबाबू को बताया था कि वि.सं. १९१८ के विषूचिका (हैजा) रोग में उस पुत्र की मृत्यु हो गई। सं. १८९६ वि. में उनकी एक बड़ी पुत्री की मृत्यु मूलशंकर के टंकारा-निवास के समय ही हो गई थी। मृत्यु के समय उसकी अवस्था १४ वर्ष की थी तथा उस समय स्वामी जी (मूलशंकर) १६ वर्ष के थे। ऋषि दयानन्द की तथाकथित 'अज्ञातजीवनी' के लेखक (वस्तुतः इस कल्पित 'अज्ञातजीवनी' के लेखक पं. दीनबन्धु शास्त्री ही थे) वे स्वामी जी की इस अनुजा को स्वामी जी से ४ चार वर्ष छोटी लिखा है तथा इसकी मृत्यु के समय स्वामीजी का वय या अवस्था १८ वर्ष बतलाया है। अज्ञात जीवनीकार का यह कथन सर्वथा असत्य या प्रलाप वचन है। साथ ही ऋषि द्वारा स्वलिखित जन्मचरित्र जो 'थियोसोफिस्ट में प्रकाशनार्थ भेजी गई थी, से प्रत्यक्ष-विरोध है। आदित्यपालसिंह (आदित्य मुनि)' ने अज्ञात जीवनीकार का समर्थन किया है। इसी से आदित्य मुनि की कलई खुल जाती है।[७]

कर्शन जी का छोटा पुत्र वल्लभ जी विवाह के दो मास पश्चात् ही मृत्यु का ग्रास बन गया। कर्शन जी ने अपनी विधवा पुत्रवधू मोंधीबाई (देवेन्द्रबाबू ने इनका नाम मोगीबाई लिखा है, दयालभाई द्वारा लिखित मोंघीबाई नाम ही शुद्ध है) के भरण-पोषण के लिए कोशिया ग्राम की कुछ भूमि उनके नाम कर दी थी। इसके अतिरिक्त मेधपुर, जिरागढ़, धूरकोट प्रभृति ग्रामों में जो कर्शन जी के शिष्य थे, उनकी वृत्ति भी उन्होंने मोंघीबाई को दे दी थी।

कर्शन जी के ज्येष्ठ पुत्र मूलशंकर जी के गृहत्याग तथा अन्य दो पुत्रों तथा एक पुत्री के देहान्त के बाद उनकी एकमात्र पुत्री प्रेमबाई ही जीवित बची। उन्होंने प्रेमबाई का विवाह राजकोट जिले के गोंडल के समीपवर्ती गुन्दाल (गुजराती में 'गुन्दाका') गाँव के निवासी 'मंगलजीलीलाधर रावल' के साथ किया। ऋषि की जीवनियों में मंगल जी के ग्राम का नाम 'गुंदिमाडू', गुंडीमाडू लिखा है जो अशुद्ध है। कर्शन जी ने अपने जामाता को टंकारा में बुला लिया तथा यहीं बसा दिया। मंगलजी के पुत्र का नाम बोधाजी था, बोधाजी के पुत्र का नाम कल्याणजी। कल्याण जी के दो पुत्र हुए।

१. बड़ा पुत्र पोपटलाल (पुकार का नाम) का ही दूसरा नाम प्रभाशंकर था।

२. छोटा पुत्र का नाम प्राणशंकर था। इस प्रकार पोपटलाल जी कर्शन जी (करसन जी) के दौहित्र के वंश में तथा ऋषि दयानन्द की बहिन (भगिनी) के वंश में आते हैं। इस प्रकार स्वामी दयानन्द की भगिनी प्रेमबाई के पौत्र कल्याण जी के दो पुत्र थे- १. प्रभाशंकर (इन्हीं के पुकार का नाम 'पोपटलाल' था)।

२. प्राणशंकर। दोनों भाइयों में सम्पत्ति का बँटवारा होने पर ऋषि का जन्म स्थान (टंकारा का घर) कल्याण जी के छोटे पुत्र प्राणशंकर के हिस्से में गया। पोपटलाल का निधन २० जनवरी १९५० ई. को हो गया। १९२६ ई. में टंकारा में जब ऋषि दयानन्द की जन्मशताब्दी मनाई गई, तब ऋषि दयानन्द के बालसखा 'इब्राहीम' (टंकारा में गुजराती उच्चारण के अनुसार 'अभराम बापा' नाम से प्रख्यात) ने अपने वक्तव्य में यह कहा था कि "मूलशंकर जी आयु में मुझसे दो साल छोटे थे। करीब २३ साल की उम्र में हमने सुना था कि वह अपनी सारी सम्पत्ति को ठुकरा कर घर से भाग गया है। उनके गोर शरीर में बड़ा बल था। वे अकेले ही मुझे और मेरे साथियों के बाल्य संग्राम में पराजित कर दिया करते थे। निर्बलों के साथ उनकी बड़ी सहानुभूति रहती थी।" यह वक्तव्य इब्राहीम ने ११ फरवरी १९२६ ई. को दिया था। इस समय उनकी अवस्था १०३ वर्ष की थी। उस समय वे अत्यन्त वृद्ध एक किसान के रूप में शनैः शनैः लकड़ी

टेकते हुए मंच पर उपस्थित हुए थे। इब्राहीम के वक्तव्य के पूर्व स्वामी जी के भगिनी के प्रपौत्र पोपटलाल (प्रभाशंकर कल्याण जी रावल) ने भी अपना वक्तव्य जनसमूह के समक्ष दिया था। उसमें उन्होंने बताया था कि ''देवेन्द्रनाथ मुखर्जी ने ऋषि के जन्मस्थान टंकारा तथा ऋषि के बाल्य नाम मूलशंकर तथा दयाल जी (दयाराम) और ऋषिवर के पिता तथा पितामह का नाम क्रमशः करसन जी तथा लाल जी के बारे में जो लिखा है पूर्णतः सत्य है। अन्तिम बार अर्थात् चौथी बार जब देवेन्द्र बाबू टंकारा आये तब हमारे परिजनों ने स्वामी जी के बारे में तथा उनके सगे-सम्बन्धियों के सम्बन्ध में सत्य बताया। स्वामी जी के जहाँ-जहाँ सगे थे और जिन लोगों ने उन्हें प्रत्यक्ष देखा था, उनके नाम तथा जानकारी जितनी मिल सकी उतनी उन्हें दिलाई।''

इस प्रकार अति संक्षेप में मैंने 'ऋषि दयानन्द के वंशवृक्ष' के सम्बन्ध में यह विवरण प्रस्तुत किया है। ऋषि जीवनचरित के यथार्थ तथ्यों के अनुसन्धान में जिन मनीषियों ने परिश्रम किया और अपना जीव खपाया है उन स्वनामधन्य महानुभावों का नामोल्लेख कर इस निबन्ध का समापन करूँगा- धर्मवीर पं. लेखराम, पं. देवेन्द्रनाथ मुखेपाध्याय, स्वामी सत्यानन्द, मास्टर लक्ष्मण आर्योपदेशक, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. चमूपति, श्री मामराज, पं. भगवद्दत्त, पं. भीमसेन शास्त्री, पं. युधिष्ठिर मीमांसक, डॉ. भवानीलाल भारतीय, श्री विपिनचन्द्र त्रिवेदी, मौलवी महेश प्रसाद आलिम फाजिल, प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, डॉ. कुशलदेव शास्त्री, डॉ. रामप्रकाश, प्रो. दयालभाई आर्य, श्री भावेश मेरजा प्रभृति मनीषियों के कारण ही ऋषि दयानन्द का वास्तविक जीवनचरित आज संसार के समक्ष आ सका है।

ऋषि दयानन्द के जीवनकाल में ही कुछ ऐसे अधम व्यक्ति भी थे जो उनके प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों के ही विरोधी नहीं थे, अपितु ऋषि जीवनी को भी अपनी हृद्गत कालिमा से कुकल्पना करके मिथ्या कलंकों से परिपूर्ण बनाना चाहते थे। किन्तु इनका दुष्प्रयास ऋषि-जीवनी के सत्यान्वेषकों के सत्प्रयास के कारण सफल नहीं हो सका।

श्री जियालाल जैनी, सत्यानन्द अग्निहोत्री से लेकर आज भी विद्यमान आदित्यमुनि (आदित्यपाल सिंह) और लोकैषणा से पीड़ित लोकेश दार्शनेय भी हैं जो श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा कल्पित जन्मकुण्डली का आश्रयण करके ऋषिवर की मिथ्या जन्मतिथि भाद्रपद मास के प्रचार-प्रसार में लगे हैं तथा आर्यजनता में भ्रम की स्थिति पैदा करना चाहते हैं। अजमेर के शास्त्रार्थ में आदित्य मुनि पराजित हो गये[८] पुनरपि कुछ और बल आ गया है तो पुनः शास्त्रार्थ-समर में आइए।

**पाद टिप्पणियाँ**

१. (क) ''संवत् १८८१ के वर्ष में मेरा जन्म दक्षिण गुजरात प्रान्त काठियावाड़ का मजोकठा देश मोर्वी का राज्य, औदीच्य ब्राह्मण के घर में हुआ था।'' (स्वामी दयानन्द सरस्वती की आत्मकथा पृ. ४५, सम्पादक-भवानीलाल भारतीय, प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली।)

(ख) ''धराङ्गधरा एक राज्य गुजरात देश में है। इसकी सीमा पर एक मौरवी नगर है, वहाँ मेरा जन्म हुआ था। मैं उदीच्य ब्राह्मण हूँ। उदीच्य ब्राह्मण सामवेदी होते हैं, परन्तु मैंने बड़ी कठिनता से यजुर्वेद पढ़ा था। मेरे घर में अच्छी जमींदारी है। इस समय मेरी अवस्था ५० वर्ष की होगी।'' (द्र. पूर्वोक्त ग्रन्थ, पृ. ६३)

(ग) ऋषि की जन्मभूमि के सम्बन्ध में पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने ऐतिहासिक शोध से पाठकों को परिचित कराया है। तदनुसार ''इस प्रदेश का सौर देश गुर्जर भूमि के साथ सम्बन्ध रखता है। पुराणादि ग्रन्थों में इस प्रदेश को सौराष्ट्र नाम से पुकारा गया है। काठिजाति से ही काठियावाड़ शब्द उत्पन्न हुआ है। बहुत काल पहले काठि लोगों ने सौराष्ट्र में आकर अपना अधिकार स्थापित किया था। तब से यह भाग 'काठियावाड़' शब्द से

अभिहित किया जाने लगा। मोरवी का प्राचीन नाम 'मयूरध्वजपुरी' था।'' दयानन्द जीवन चरित, भाग-१, पृ. ३७-४० तक, चतुर्थावृत्ति, २०१८ वि.सं.

२. मौरवी के दीवान पद पर 'जीवा मेहता' नामक एक प्रभावशाली व्यक्ति थे। जाति से वैश्य होने पर भी उन्होंने अनेक युद्ध किये थे। टंकारा गाँव में चारों ओर जो परकोटा है, उसे संवत् १७७४ वि. में जीवा मेहता ने ही बनवाया है। इस प्राचीर के निर्माण के समय वे टंकारा में कुछ दिन रहे थे। उसी समय उन्होंने जामनगर राज्य के पङ्कधरी गाँव के ठाकुर से युद्ध भी किया था। इन्हीं जीवा मेहता ने अपनी स्मृति को सुरक्षित रखने के लिए मौरवी स्थित कुबेरनाथ मन्दिर में एक वापी बनवाई थी, जो 'जीवा मेहता की वाव' के नाम से आज भी विद्यमान है। इन्हीं मेहता जी ने टंकारा के परकोटे के निर्माण के समय टंकारा में रहते हुए एक मुहल्ले का नाम जीवापुर नामकरण अपनी स्मृति को स्थायी बनाने के लिए किया। इन्हीं के नाम पर चार वर्ष बाद १८८७ वि. सं. में 'जीवापुर' नामक गाँव की स्थापना भी की गई। उसी समय जीवा मेहता जी टंकारा से करसन जी त्रिवाड़ी के प्रपितामह मेघ जी त्रिवेदी के पुत्र विश्राम जी जो मूलशंकर के पितामह लालजी त्रिवाड़ी के चाचा थे को जीवापुर ले गये और उन्हीं वहीं बसा दिया।

३. प्रो. भीमसेन शास्त्री- 'उपर्युक्त जन्म सीमाओं में मूल नक्षत्र फाल्गुन बदि १० तथा ११ को है। दशमी में इसका बहुत थोड़ा भाग है मूलनक्षत्र का अधिकांश एकादशी में है। इस प्रकार सं. १८८१, फाल्गुन बदि ११, रविवार (१३ फरवरी १८२५ ई.) वेद-प्रमाण महर्षि दयानन्द की जन्मतिथि है। सूर्योदय समय की तिथि कहनी हो तो यह संवत् १८८१ फाल्गुन बदि १० शनिवार (१२ फरवरी १८२५ ई.) कही जाएगी।'

द्रष्टव्य - [एक अपूर्व खोज- 'महर्षि की जयन्ती तिथि', वेदप्रकाश मासिक पत्रिका, अप्रैल-मई १९५५ ई., (मई अंक पृ. १३)]

४. [दयाल मुनि आर्य, 'ऋषि दयानन्द की प्रारम्भिक जीवनी', पृ. २४-४३, प्रकाशक- डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, सत्यार्थ प्रकाशन न्यास, कुरुक्षेत्र (हरियाणा), सम्पादक- भावेश मेरजा २०१५ ई., प्रथम संस्करण]

५. वही, पृ. ३३-३४

६. प्रो. भीमसेन शास्त्री, वेदप्रकाश मासिक पत्रिका १९५५ई. के अप्रैल मास के प्रकाशित 'महर्षि की जयन्ती तिथि', पृ. ८।

७. 'महर्षि दयानन्द सरस्वती : अपना जन्मचरित्र', सम्पादक आदित्यपाल सिंह आर्य तथा डॉ. वेदव्रत आलोक, पृ. २२ तथा टिप्पणी - ३६, प्रथम संस्करण १९८७ ई.।

८. आदित्यमुनि संवत् १८८१ तदनुसार २० सितम्बर १८२५ ई. का व्हाट्सअप के माध्यम से धुआँधार प्रचार करते देख मैंने उन्हें शास्त्रार्थ की चुनौती दी। बड़े मुश्किल से वे तैयार हुए। फलतः ३०-३१ मार्च २०२२ ई. को परोपकारिणी सभा के ऋषि उद्यान में मेरा उनसे शास्त्रार्थ तय हुआ। संयोजक आचार्य सत्यजित् ने अपनी मुनिवृत्ति के कारण इसे 'संवाद' नाम दिया। ३० मार्च को दूसरी बैठक में ही आदित्यमुनि जी निरुत्तर हो गये और अपनी ही बात को बार-बार पिष्टपेषण करते रहे। परिणामतः शास्त्रार्थ के संचालक डॉ. वेदपाल जी तथा माननीय पूर्व न्यायमूर्ति श्री सज्जनसिंह कोठारी ने अनावश्यक समझकर अगले दिन ३१ मार्च का कार्यक्रम स्थगित कर दिया। उस शास्त्रार्थ का पूर्ण विवरण सितम्बर मास के 'परोपकारी' के विशेष अंक में ५१ पृष्ठों में छापा गया है। पुनरपि लिखित वा मौखिक-शास्त्रार्थ के लिए मैं उन्हें एवं श्री लोकेश दार्शनेय को चुनौती देता हूँ। [ज्वलन्त शास्त्री]

**वैचारिक क्रान्ति के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।**